

अथर्ववेद

काण्ड १

सूक्त १

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaanda 1

Sukta 1

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ऋषि पदार्थ विद्या का महत्त्व बताते हुए विज्ञान के लिए वेदों की शरण में जाने का उपदेश देते हैं। एक विद्वान् गुरु जिसने वैदिक ज्ञान पर अधिकार कर लिया है, सारे समाज को अनुशासन का मार्ग दिखा सकता है। सबको ऐसे गुरु को ढूँढ़ कर विनयशीलता के साथ उससे वेदों का ज्ञान प्राप्त कर उसके अनुसार आचरण करना चाहिए।

प्रथम मन्त्र में ऋषि जगत् की संरचना जानने में वेदों का महत्त्व समझा रहे हैं।

अथर्वा ऋषिः। वाचस्पतिर्देवता। ३२ अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

ये त्रिषुप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।

वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥१॥

अथर्व १:१:१:१

ये। त्रिऽसुप्ताः। परिऽयन्ति। विश्वा। रूपाणि। बिभ्रतः॥

वाचः। पतिः। बला। तेषाम्। तन्वाः। अद्य। दधातु। मे॥१॥

(त्रिऽसुप्ताः) सत्व, रजस् और तमस् तीन गुणों वाली मूल प्रकृति और उससे उत्पन्न हुए सात तत्त्व महत्, अहंकार और पाँच तन्मात्राएं (ये) जो इस जगत् के समवायि कारण हैं, उनका ही (रूपाणि) रूप (बिभ्रतः) धारण कर यह (विश्वा) जगत् (परियन्ति) चारों ओर गति कर रहा है। इनका ज्ञान ईश्वर ने तीन वचन और सात विभक्तियों की संरचना वाली संस्कृत भाषा में वैदिक वाङ्मय के रूप में ऋषियों को प्रदान किया। इस (वाचः) वैदिक वाङ्मय पर (पतिः) अधिकार रखने वाले, मेरे गुरु (अद्य) आज (तेषाम्) इन तत्त्वों का ज्ञान मेरी बुद्धि में और इनके (बला) बलों को (मे) मेरे (तन्वः) शरीर में (दधातु) स्थापित कीजिए।

दूसरे मन्त्र में ऋषि शिक्षा में गुरु के महत्त्व को समझा रहे हैं।

अथर्वा ऋषिः। वाचस्पतिर्देवता। ३२ अक्षराणि। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।

वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम् ॥२॥

अथर्व १:१:१:२

पुनः। आ। इहि। वाचः। पते। देवेन। मनसा। सह॥

वसोः। पते। नि। रमय। मयि। एव। अस्तु। मयि। श्रुतम्॥२॥

Synopsis

In this composition the sage discusses the importance of learning the science of matter and points towards the Vedas for such knowledge. A scholar who has mastered the Vedic wisdom can show the pathway of discipline to the entire society. Everyone should seek such a teacher and very humbly learn from him/her and conduct themselves accordingly.

In the first mantra the sage describes the importance of the Vedic knowledge in understanding the composition of this Universe.

riṣhiḥ atharvaa, **devataa** vaachaspatiḥ, **vowels** 32, **chhandah** aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaarah.

**1. ye triṣhaptaaḥ pariyaṇti vishvaa roopaāṇi bibhrataḥ,
vaachaspatirbalaa teṣhaan tanvo adya dadhaatu me.**

Atharva 1:1:1:1

ye tri-saptaaḥ pari-yaṇti vishvaa roopaāṇi bibhrataḥ,
vaachaḥ patiḥ balaa teṣhaam tanvaḥ adya dadhaatu me.

The subatomic matter possesses (*tri*) three qualities *satva*, *rajas* and *tamas* and from it originated (*saptaaḥ*) the seven basic elements i.e. *mahat*, *ahaṅkaara* and five subtle elements i.e. *shabda*, *roopa*, *sparsha*, *rasa* and *gandha*. (*ye*) These are the material cause of the Universe. (*vishvaa*) Everything (*yaṇti*) moving around (*pari*) in all directions (*bibhrataḥ*) has derived its (*roopaāṇi*) qualities from these basic elements and qualities. God has provided the knowledge of these elements to sages in the form of the Vedas composed in Sankṛit language that has a structure of three cardinalities and seven transformations. (*adya*) Today, may (*patiḥ*) the master of (*vaachaḥ*) the Vedic knowledge, my teacher, (*dadhaatu*) establish this knowledge in my mind and help (*me*) my (*tanvaḥ*) body harness (*balaa*) the power of (*teṣhaam*) these elements!

In the second mantra the sage mentions the importance of learning from an accomplished scholar.

riṣhiḥ atharvaa, **devataa** vaachaspatiḥ, **vowels** 32, **chhandah** aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaarah.

**2. punarehi vaachaspate devena manasaa saha,
vasoṣhpate ni ramaya mayyevaastu mayi shrutam.**

Atharva 1:1:1:2

punaḥ aa ihi vaachaḥ pate devena manasaa saha,
vasoḥ pate ni ramaya mayi eva astu mayi shrutam.

हे (वाचः) वैदिक वाङ्मय के (पते) स्वामी, आचार्य! आप अपने (देवेन) परोपकारी (मनसा)(सह) मन से उपदेश देने के लिए (पुनः) बार बार मेरे (आ) समीप (इहि) आईये । हे (वसोः) प्रकाशवान् ज्ञान के (पते) स्वामी! आपका गुरुकुल (मयि) मेरे (नि)(रमय) आनन्दपूर्वक रहने के लिए (अस्तु) हो और आपके उपदेश (मयि) मेरे (एव) ही (श्रुतम्) सुनने और अनुसरण करने के लिए हो ।

तीसरे मन्त्र में ऋषि अनुशासन के महत्त्व पर विचार करते हैं ।

अथर्वा ऋषिः । वाचस्पतिर्देवता । ३० अक्षराणि । विराडार्घ्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

इ॒है॒वाभि॑ वि त॒नु॒भे आ॒र्त्नी॑ इ॒व॒ ज्यया॑ ।

वा॒चस्पति॑र्नि य॒च्छतु॑ मय्ये॒वास्तु॑ मयि॑ श्रुतम् ॥३॥

अथर्व १:१:१:३

इह । एव । अभि । वि । तनु । उ॒भे इति॑ । आ॒र्त्नी॑ इवेत्या॒र्त्नी॑ इ॒व । ज्यया॑ ॥

वा॒चः । पतिः॑ । नि । य॒च्छतु॑ । मयि॑ । एव । अ॒स्तु । मयि॑ । श्रुतम् ॥३॥

(इव) जैसे (ज्यया) धनुष की डोरी उसके (उभे) दोनों (आ॒र्त्नी) सिरों को बांध कसकर रखती है (एव)

वैसे आचार्य भी (इह) यहाँ (अभि) सब ओर सबको ज्ञान के अनुशासन में (वि)(तनु) बांधकर रखे

। (वाचः) वैदिक वाङ्मय का (पतिः) स्वामी समाज को (नि) नियम (य॒च्छतु) बताए । (एव) वही नियम

(मयि) मेरे लिए भी (अस्तु) हो । (मयि) मैं आचार्य के उपदेश को (श्रुतम्) सुन उसका पालन करूँ ।

चौथे मन्त्र में ऋषि छात्रों में विनयशीलता की आवश्यकता पर बल देते हैं ।

अथर्वा ऋषिः । वाचस्पतिर्देवता । ३४ अक्षराणि । चतुष्पदा उरो विराडार्घी बृहती छन्दः । मध्यमः स्वरः ।

।

उप॑हूतो वा॒चस्पति॑रुपा॒स्मान्वा॒चस्पति॑र्ह्वयताम् ।

सं श्रुतेन॑ गमेमहि॒ मा श्रुतेन॑ वि रा॑धिषि ॥४॥

अथर्व १:१:१:४

उप॑हूतः । वा॒चः । पतिः॑ । उप॑ । अ॒स्मान् । वा॒चः । पतिः॑ । ह्वयता॑म् ॥

सम् । श्रुतेन॑ । गमेमहि॑ । मा । श्रुतेन॑ । वि । रा॑धिषि ॥४॥

(उप॑हूतः) श्रद्धापूर्वक बुलाया गया (वाचः) वैदिक वाङ्मय पर (पतिः) अधिकार रखने वाला

आचार्य विराजमान है । वह (वाचः)(पतिः) विद्वान् (अ॒स्मान्) हमें अपने (उप) पास विद्या ग्रहण करने

के लिए (ह्वयताम्) बुलाए ताकि (श्रुतेन) वेदों के साथ (सम्)(गमेमहि) हमारा संगम हो सके और हम

कभी भी (श्रुतेन) वेद के श्रवण से (वि)(राधिषि) विमुख (मा) न हों ।

(pate) O master of (vaachah) the Vedic knowledge! O Teacher! (saha) Along with your (devena) benevolent (manasaa) mind, (punah) again and again please (ihi) come (aa) near me to render your discourses on the Vedas. (pate) O master of (vasoh) illuminating knowledge! May (mayi) I (astu) be (ni)(ramaya) comfortable in your academy and (eva) indeed (shrutam) listen to, memorize and follow your discourses.

In the third mantra the sage discusses the importance of discipline.

ṛiṣhiḥ atharvaa, devataa vaachaspatiḥ, vowels 30, chhandah viraaḍ aarṣhy anuṣṭup, svarah gaandhaarah.

3. ihaivaabhi vi tanoobhe aartnee iva jyayaa,

vaachaspatirni yachchhatu mayyevaastu mayi shrutam.

Atharva 1:1:1:3

iha eva abhi vi tanu ubhe aartnee iva jyayaa,

vaachah patih ni yachchhatu mayi eva astu mayi shrutam.

(iva) As (jyayaa) a bowstring ties its (ubhe) both (aartnee) ends and keeps them taut, (eva) so should a teacher keep (abhi) everyone (iha) here (vi)(tanu) tied to the discipline of the dharma. The (patih) master of (vaachah) Vedic wisdom (yachchhatu) should provide everyone (ni) with the rules of conduct. May those rules (astu) be (mayi) for myself (eva) as well! May (mayi) I (shrutam) listen to the teacher's discourses and act accordingly!

In the fourth mantra the sage emphasizes on the attribute of humility that all of the students must possess.

ṛiṣhiḥ atharvaa, devataa vaachaspatiḥ, vowels 34, chhandah chatuṣhpadaa uro viraaḍ aarṣhee bṛihatee, svarah madhyamah.

4. upahooto vaachaspatirupaasmaanvaachaspatirhvayataam,

sañ shrutena gamemahi maa shrutena vi raadhiṣhi.

Atharva 1:1:1:4

upa-hootah vaachah patih upa asmaan vaachah patih hvayataam,

sam shrutena gamemahi maa shrutena vi raadhiṣhi.

(patih) The master of (vaachah) Vedic wisdom has been (upa-hootah) invited with due respect and is now seated. May that (vaachah)(patih) scholar (hvayataam) call (asmaan) us (upa) near him so that we can be exposed to and (sam)(gamemahi) be united (shrutena) with the Vedas as well! May we (maa) never (vi)(raadhiṣhi) be alienated (shrutena) from the words of the Vedas.